

राजस्थान सरकार  
न्यायालय जिला मजिस्ट्रेट, पाली (राजस्थान)

विविध :: 73/2018

प्रार्थी  
भारतीय स्टेट बैंक, मुम्बई, शाखा  
कार्यालय सोमेश्वर, तहसील रानी  
जिला पाली (राज.)

बनाम

अप्रार्थी

1. विक्रमसिंह पुत्र दिलीपसिंह उर्फ दलीपसिंह जाति राजपूत निवासी 81, मुख्य सड़क के पास, ग्राम नारवां खिचियान, तहसील मण्डोर जिला जोधपुर (राज.) ठिकाना- मैसर्स जय मां आशापुरा सेण्ड स्टोन, खसरा नम्बर 26/1429 ग्राम जवाली, तह. रानी, जिला पाली (राज.)

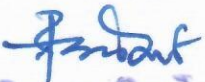
प्रार्थना पत्र अन्तर्गत धारा 14 दी सिक्युराइजेशन एण्ड रिकन्सट्रक्शन ऑफ फाईनेन्शियल एसेट्स एण्ड एन्फोर्समेन्ट ऑफ सिक्युरिटी इन्ट्रेस्ट एक्ट 2002 (The Securitisation and Reconstruction of Financial Assets and Enforcement of Security Interest Act, 2002)

आदेश

दिनांक 23/10/18

प्रार्थी बैंक की ओर से यह प्रार्थना पत्र अन्तर्गत धारा 14 The Securitisation and Reconstruction of Financial Assets and Enforcement of Security Interest Act, 2002 के तहत पेश हुआ जो दर्ज रजिस्टर कर पत्रावली एवं दस्तावेजों का ध्यानपूर्वक अवलोकन किया गया ।

प्रार्थी बैंक ने प्रार्थना पत्र में वर्णित किया कि अप्रार्थी संख्या 1 बैंक के ऋणी है। अप्रार्थी संख्या 1 ने प्रार्थी बैंक से दिनांक 11.02.2016 को 21,44,000/- अक्षरे इक्कीस लाख चवालीस हजार रुपये ( 5,24,000/- अक्षरे पांच लाख चौबीस हजार का सी.सी. ऋण व 16,20,000/- अक्षरे सोलह लाख बीस हजार का आवधिक ऋण) को अपनी वित्तीय आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु आवेदन कर ऋण प्राप्त किया तथा ऋणी/जमानती ने उपरोक्त ऋण व उस पर देय ब्याज व खर्चों के लिए अपनी प्रतिभूतिस्वरूप अचल सम्पत्ति जो अप्रार्थी संख्या 01 विक्रमसिंह पुत्र दिलीपसिंह के नाम भारमुक्त आवासीय/व्यापारिक सम्पत्ति जो खसरा नम्बर 26/1429 ग्राम जवाली, तहसील रानी जिला पाली में स्थित है जिसका क्षेत्रफल 0.0592 हैक्टेयर है। जिसके उत्तर में कृषि भूमि खसरा नम्बर 26, दक्षिण में कृषि भूमि खसरा नम्बर 26/1281, पूर्व में सड़क एवं पश्चिम में कृषि भूमि खसरा नम्बर 26/1429 है। अप्रार्थी के द्वारा ऋण इकरारनामा व साम्य मूलक बंधक सृजन करने का पत्र आदि दस्तावेजात पर अपने हस्ताक्षर कर निष्पादित किया। अप्रार्थीगण ने ऋण प्राप्त करने के पश्चात ऋणी/जमानती ने ऋण इकरारनामा की शर्तों के अनुरूप ऋण खाते का संचालन नहीं किया जबकि अप्रार्थी को अपने उपरोक्त ऋण खाते का संचालन निष्पादित इकरारनामा के शर्तों के अनुरूप करना था। अप्रार्थी ने अपने स्वामित्व की सम्पत्ति को प्रार्थी बैंक के पास जरिये **Mortgage by deposit of title deeds** के बंधक रखा। अप्रार्थीगण ने ऋण अनुबंध शर्तों के अनुरूप उक्त खाते में लेनदेन नहीं किया एवं इकरारनामा की शर्तों के अनुरूप देय राशि व ब्याज का भुगतान नहीं किया जो ऋण अनुबंध का स्पष्ट उल्लंघन है। अप्रार्थी को उक्त अधिनियम की धारा 13 (2) के अन्तर्गत नोटिस दिनांक 25.04.2018 को देकर बकाया राशि मय ब्याज के 17,05,959/- अक्षर सत्रह लाख पांच हजार नौ सौ उनसाठ रुपये के मांग हेतु नोटिस दिया गया। देय नोशनल ब्याज व खर्चों की मांग की गई लेकिन ऋणी ने प्रार्थी बैंक को देय समस्त राशि का भुगतान नोटिस देने के उपरान्त भी नियत अवधि में नहीं किया। अतः अप्रार्थीगण द्वारा इस ऋण के लिये बतौर प्रतिभूतिस्वरूप बंधक रखे गये स्वामित्व की सम्पत्ति का कब्जा एवं इससे संबंधित अन्य कोई दस्तावेज अप्रार्थीगण के कब्जे में हो तो उन दस्तावेजों को भी प्रार्थी बैंक को दिलाया जावे।

  
जिला मजिस्ट्रेट, पाली

क्रमश पृष्ठ :: 2

पत्रावली एवं प्रस्तुत दस्तावेजों का ध्यानपूर्वक अवलोकन किया। पत्रावली के अवलोकन से स्पष्ट हैं कि प्रार्थी बैंक ने अप्रार्थीगण को अपनी वित्तीय आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु रूपये 21,44,000/- (अक्षरे इक्कीस लाख चवालीस हजार रुपये) का ऋण दिया उक्त ऋण के बदले में इकरारनामा व उससे संबंधित दस्तावेजात तैयार कर अपने हस्ताक्षर के प्रार्थी बैंक के पक्ष में निष्पादित किये। प्रार्थी बैंक ने नियमानुसार ऋण वसूली के लिये अधिनियम की धारा 13(2) के अधीन अप्रार्थीगण को नोटिस भी जारी किया। नोटिस प्राप्ति के पश्चात भी अप्रार्थीगण ने बैंक को ऋण राशि का भुगतान नहीं किया। The Securitisation and Reconstruction of Financial Assets and Enforcement of Security Interest Act, 2002 की धारा 14 में उक्त रहन की गई सम्पत्ति को प्रार्थी के कब्जे में दिलाये जाने का स्पष्ट प्रावधान है। जो इस प्रकार है:

**14. Chief Metropolitan Magistrate or District Magistrate to assist secured creditor in taking possession of secured asset -** (1) Where the possession of any secured assets is required to be taken by the secured creditor or if any of the secured assets is required to be sold are transferred by the secured creditor under the provisions of this act, the secured creditor may, for the purpose of taking possession or control of any such secured asset, request, in writing the Chief Metropolitan Magistrate or the District Magistrate within jurisdiction any such secured asset or other documents relating thereto may be situated or found, to take possession thereof, and the Chief Metropolitan Magistrate or, as the case may be, the District Magistrate shall on such request being made to him --

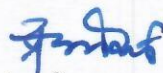
- (a) Take possession of such asset and documents relating thereto; and  
(b) Forward such assets and documents to the secured creditor.

(2) For the purpose of securing compliance with the provisions of sub-section (1), the Chief Metropolitan Magistrate or the District Magistrate may take or cause to be taken such steps and use, or cause to be used, such force, as may, in his opinion, be necessary.

परिणामस्वरूप तथ्यों के सन्दर्भ में प्रार्थना पत्र अन्तर्गत धारा 14 The Securitisation and Reconstruction of Financial Assets and Enforcement of Security Interest Act, 2002 में प्रार्थी का प्रार्थना पत्र स्वीकार किया जाता है। आदेश की प्रति पुलिस अधीक्षक, पाली को भेजकर अप्रार्थीगण द्वारा प्रार्थी बैंक के पक्ष में बतौर प्रतिभूति स्वरूप अपने स्वामित्व की सम्पत्ति जो ऊपर वर्णित किया है, के संबंध में थानाधिकारी, पुलिस थाना रानी पाली, जिला पाली को निर्देशित करें कि वे उक्त भूमि का कब्जा व उससे संबंधित अन्य कोई दस्तावेज अप्रार्थीगण के कब्जे में हो तो उन दस्तावेजों को प्रार्थी बैंक को संभलाकर पालना रिपोर्ट भिजवाने हेतु पाबन्द करें। आदेश की एक प्रति थानाधिकारी, रानी पाली, जिला पाली एवं प्रार्थी को आवश्यक कार्यवाही हेतु एवं पालनार्थ प्रेषित की जावें।

आदेश सुनाया गया ।



  
(सुधीर कुमार शर्मा)  
जिला मजिस्ट्रेट, पाली